

“सफेद सोना: भारत की कपास की कहानी”

बीज से लेकर शर्ट तक

भारत की कृषि और औद्योगिक अर्थव्यवस्था में कपास का एक विशिष्ट स्थान है। भारत एकमात्र ऐसा देश है जो कपास की चारों मान्यता प्राप्त प्रजातियों की खेती करता है। क्षेत्रफल के हिसाब से यह वैश्विक स्तर पर पहले स्थान पर है और उत्पादन एवं उपभोग में दूसरे स्थान पर है। वर्ष 2025-26 (अस्थायी अनुमान) में कपास का उत्पादन **290.91 लाख गांठ** रहा। इसी अवधि में घरेलू खपत **328 लाख गांठ तक पहुंच गई। यह क्षेत्र वैश्विक रेशा उत्पादन में लगभग 19 प्रतिशत का योगदान देता है।** हाल के प्रयासों का मुख्य उद्देश्य उत्पादकता, गुणवत्ता, बाजार पहुंच और मूल्यवर्धन पर ध्यान केंद्रित करना है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के संचालन से बाजार में मंदी के दौरान कीमतों को समर्थन मिलता रहता है। कपास उत्पादकता मिशन का लक्ष्य 2031 तक उत्पादन को **498 लाख गांठ तक बढ़ाना है।** प्रौद्योगिकी प्रदर्शन, डिजिटल खरीद और पता लगाने की क्षमता संबंधी पहल प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत कर रही हैं। इन प्रयासों से उत्पादकता बढ़ रही है, गुणवत्ता में सुधार हो रहा है और वैश्विक कपास अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति मजबूत हो रही है।

वह सूत्र जो लाखों लोगों को जोड़ता है

कल्पना कीजिए भारत भर में फैले खेतों की, जहां छोटे-छोटे सफेद फूल सूरज की रोशनी में धीरे-धीरे रेशों के मुलायम बादलों में तब्दील हो जाते हैं। इन्हीं खेतों से एक ऐसी यात्रा शुरू होती है जो कताई मिलों, हथकरघों से होकर गुजरती है और अंततः दुनिया भर के लोगों की अलमारियों तक पहुँचती है। कपास महज़ एक फसल नहीं है। यह एक ऐसा धागा है जो कृषि, उद्योग और व्यापार को एक निरंतर कहानी में पिरोता है।

भारत में कपास सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसलों में से एक है। वैश्विक रेशा उत्पादन में इसका योगदान लगभग **23 प्रतिशत है। यह फसल लगभग 60 लाख कपास किसानों की आजीविका का आधार है।** इसके अलावा, कपास प्रसंस्करण और व्यापार जैसे संबंधित कार्यों में **लगे 40-50 करोड़ लोगों को रोजगार भी मिलता है।** वस्त्रों के अलावा, कपास रेशा, सूत, कपड़े और परिधानों के निर्यात के माध्यम से विदेशी मुद्रा अर्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में इसके आर्थिक महत्व के कारण इसे **“सफेद सोना” भी कहा जाता है।**

भारत का कपास क्षेत्र गहराई और गतिशीलता दोनों का प्रतीक है। इसकी ताकत जैविक विविधता, व्यापक खेती और सुदृढ़ वस्त्र उद्योग में निहित है। एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) संचालन, कपास उत्पादकता मिशन और कस्तूरी कॉटन भारत जैसी नीतिगत पहल इस आधार को और मजबूत कर रही हैं। प्रौद्योगिकी को अपनाना, बाजार सुधार और गुणवत्ता संवर्धन के प्रयास इस क्षेत्र के भविष्य के मार्ग को और भी आकार दे रहे हैं।

स्वदेशी से आत्मनिर्भर भारत तक

भारत का कपास से संबंध हजारों वर्षों पुराना है। उपमहाद्वीप कभी सूती वस्त्रों का वैश्विक केंद्र था, जहां पूर्वी और यूरोपीय बाजारों में सूती वस्त्रों का व्यापार होता था। प्राचीन काल में सूती कपड़ा विनिमय के माध्यम के रूप में भी कार्य करता था। इससे इसके आर्थिक महत्व और व्यापक स्वीकृति का पता चलता है।

आधुनिक सूती उद्योग ने 19^{वीं} शताब्दी में कोलकाता, मुंबई और अहमदाबाद में कपड़ा मिलों की स्थापना के साथ आकार लेना शुरू किया। अहमदाबाद को "भारत का मैनचेस्टर" कहा जाने लगा। 19^{वीं} शताब्दी के उत्तरार्ध और 20^{वीं} शताब्दी के आरंभ में इसका विस्तार तेजी से हुआ। स्वदेशी आंदोलन ने ब्रिटिश उत्पादों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के लिए स्वदेशी मिलों की स्थापना को बढ़ावा दिया। विश्व युद्धों के दौरान वैश्विक मांग ने घरेलू उद्योग को और भी बल दिया। 20^{वीं} शताब्दी के मध्य तक, देश भर में कपड़ा मिलों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई। इसके परिणामस्वरूप स्वतंत्रता से पूर्व के वर्षों में सूती कपड़े के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह भारत के सूती उद्योग के बढ़ते पैमाने और लचीलेपन को दर्शाता है।

भारत के कपास क्षेत्र के अनेक आयाम

भारत एकमात्र ऐसा देश है जहाँ कपास की चारों मान्यता प्राप्त प्रजातियों की खेती की जाती है। इनमें जी. आर्बोरियम और जी. हर्बेसियम शामिल हैं, जिन्हें आमतौर पर एशियाई कपास कहा जाता है। अन्य प्रजातियाँ जी. बारबाडेंस हैं, जिन्हें मिस्र की कपास के नाम से जाना जाता है, और जी. हिरसुटम हैं, जिन्हें अमेरिकी अपलैंड कपास के नाम से जाना जाता है। इनमें से, जी. हिरसुटम भारत में संकर कपास उत्पादन का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा है। देश में वर्तमान में उगाई जाने वाली सभी बीटी कपास संकर प्रजातियाँ इसी प्रजाति की हैं।

बीटी का तात्पर्य बैसिलस थुरिंगिएन्सिस से है, जो मिट्टी में प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला एक जीवाणु है। बीटी कपास एक आनुवंशिक रूप से संशोधित कपास की फसल है जिसमें इस जीवाणु के जीन शामिल किए गए हैं। ये जीन कपास की खेती को प्रभावित करने वाले एक प्रमुख कीट, बॉलवर्म के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं। भारत में 2002 में

व्यावसायिक रूप से शुरू की गई बीटी कपास ने बॉलवर्म के प्रकोप को काफी हद तक कम कर दिया और कीटनाशक छिड़काव की आवश्यकता को भी घटा दिया। उच्च पैदावार और कीट नियंत्रण लागत में कमी के संयुक्त प्रभाव से इसके अपनाने के बाद किसानों की आय में सुधार हुआ।

भारत में कपास की वानस्पतिक विविधता के अलावा, इसे स्टेपल की लंबाई के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है। यह लंबाई रेशे की गुणवत्ता और उसके अंतिम उपयोग को निर्धारित करती है। देश स्टेपल की सभी श्रेणियों का उत्पादन करता है। कपास के रेशों की लंबाई और गुणवत्ता को भी स्टेपल कहा जाता है।

मुख्य श्रेणियाँ	स्टेपल की लंबाई (मिमी में)
छोटे स्टेपल	20 और उससे कम
मध्यम स्टेपल	20.5 से 24.5
मध्यम लंबे स्टेपल	25.0 से 27.0
लंबे स्टेपल	27.5 से 32.0
अतिरिक्त-लंबे स्टेपल	32.5 और उससे अधिक

कपास की खेती का भौगोलिक प्रसार



भारत में कपास का उत्पादन मुख्य रूप से 9 प्रमुख राज्यों में केंद्रित है , जिन्हें 3 अलग-अलग कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों में बांटा गया है:

- उत्तरी क्षेत्र जिसमें पंजाब, हरियाणा और राजस्थान शामिल हैं
- मध्य क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश शामिल हैं।
- दक्षिणी क्षेत्र में तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक शामिल हैं।

इन राज्यों के अलावा, ओडिशा और तमिलनाडु में भी कपास की खेती की जाती है।

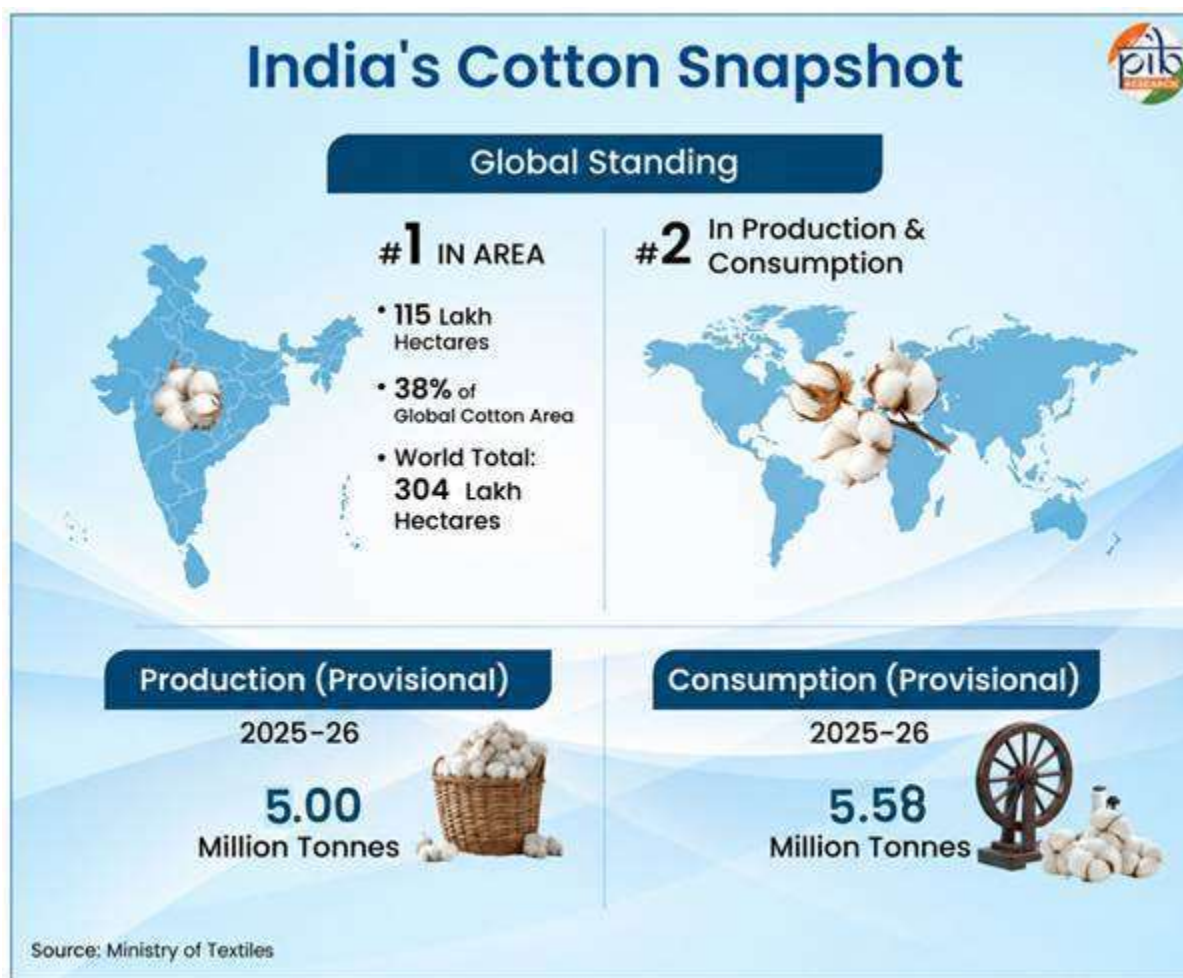
क्षेत्रफल, उत्पादन और खपत के मामले में भारत में कपास क्षेत्र का मजबूत स्थान

भारत कपास की खेती के क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) में विश्व में पहले स्थान पर है , जहां 114.84 लाख हेक्टेयर भूमि पर कपास की खेती होती है। यह वैश्विक कपास क्षेत्र (304.08 लाख हेक्टेयर) का लगभग 38 प्रतिशत है। देश में कपास उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा वर्षा पर निर्भर करता है, लगभग 62 प्रतिशत वर्षा आधारित क्षेत्रों में उगाया जाता है। शेष 38 प्रतिशत की खेती सिंचित क्षेत्रों में की जाती है।

भारत कपास उत्पादन और खपत दोनों में वैश्विक स्तर पर दूसरे स्थान पर है । यह इसकी व्यापक खेती और कपड़ा उद्योग की मजबूती को दर्शाता है। कपास उत्पादन को आमतौर

पर गांठों में मापा जाता है; यह कपास व्यापार में प्रयुक्त मानक इकाई है। एक गांठ 170 किलोग्राम के बराबर होती है। 2024-25 के कपास सीजन के दौरान, कपास उत्पादन 297.24 लाख गांठ (5.06 मिलियन टन) रहा। यह वैश्विक कपास उत्पादन का लगभग 20 प्रतिशत है।

वर्ष 2025-26 (अनंतिम) के लिए कपास उत्पादन 290.91 लाख गांठ (4.95 मिलियन टन) रहा । सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), गैर-एमएसएमई और गैर-वस्त्र क्षेत्रों सहित घरेलू खपत 328 लाख गांठ (5.58 मिलियन टन) रही । ये आंकड़े वैश्विक कपास अर्थव्यवस्था में भारत की प्रमुख स्थिति को दर्शाते हैं।



कपास निर्यात और भारत का व्यापारिक प्रभाव

भारत वैश्विक कपास व्यापार में अपनी मजबूत उपस्थिति बनाए हुए है। 2024-25 में, देश ने अनुमानित 18 लाख गांठें (0.31 मिलियन मीट्रिक टन के बराबर) निर्यात कीं। यह कुल विश्व निर्यात का लगभग 3.37 प्रतिशत है, जो 541.69 लाख गांठों (9.21 मिलियन मीट्रिक टन) के

बराबर है। यह अंतरराष्ट्रीय कपास बाजार में एक महत्वपूर्ण निर्यातक के रूप में भारत की भूमिका को दर्शाता है।

इसके अलावा, भारत कई प्रमुख वैश्विक बाजारों में कपास का निर्यात करता है, जो मजबूत और विविध अंतरराष्ट्रीय मांग को दर्शाता है। मूल्य के हिसाब से, वित्त वर्ष 2025 में कपास का निर्यात 11.49 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। अमेरिका भारतीय सूती कपड़ों और तैयार उत्पादों के निर्यात का सबसे बड़ा गंतव्य बनकर उभरा, जिसका कपास निर्यात में 26.35 प्रतिशत हिस्सा था। इसके बाद बांग्लादेश 19.81 प्रतिशत और श्रीलंका 5.11 प्रतिशत के साथ दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। अन्य महत्वपूर्ण गंतव्यों में ब्रिटेन (2.38 प्रतिशत) और संयुक्त अरब अमीरात (2.32 प्रतिशत) शामिल थे।



ये निर्यात स्वरूप भारतीय कपास की विविध वैश्विक मांग को उजागर करते हैं और देश की कृषि और वस्त्र अर्थव्यवस्था में इसके महत्व को सुदृढ़ करते हैं।

प्रतिस्पर्धी कपास पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

कपास क्षेत्र के विकास को बहुआयामी रणनीति ने गति प्रदान की है। प्रमुख प्राथमिकताओं में मूल्य समर्थन, उत्पादकता वृद्धि, प्रौद्योगिकी अपनाना और बाजार को मजबूत करना शामिल हैं। किसानों की आय की रक्षा करने और भारतीय कपास की प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार लाने के लिए, नीचे उल्लिखित कई लक्षित पहलें की गई हैं।

न्यूनतम समर्थन मूल्य संचालन

कपास की खेती को बनाए रखने के लिए स्थिर लाभ आवश्यक है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) प्रणाली कपास किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच का काम करती है। यह सुनिश्चित करती है कि जब बाजार दरें घोषित समर्थन स्तर से नीचे गिर जाएं, तब भी किसानों को लाभकारी मूल्य मिले। प्रत्येक कपास वर्ष (अक्टूबर से सितंबर) से पहले, कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) द्वारा एमएसपी की सिफारिश की जाती है। यह मध्यम रेशा और लंबे रेशा वाली कपास की किस्मों के लिए घोषित किया जाता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसानों को उत्पादन लागत पर कम से कम 50 प्रतिशत लाभ प्राप्त हो।

कपास एमएसपी संचालन और सीसीआई की भूमिका

सरकार ने कपास की खरीद के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) संचालन का जिम्मा कॉटन कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (सीसीआई) को सौंपा है। बीज कपास की कीमतें एमएसपी स्तर से नीचे गिरने पर सीसीआई हस्तक्षेप करता है। केंद्रीय नोडल खरीद एजेंसी के रूप में, सीसीआई ने अपने परिचालन नेटवर्क का लगातार विस्तार किया है। खरीद केंद्रों की संख्या 2024-25 में 508 से बढ़कर 2025-26 में 571 हो गई है। ये केंद्र कपास उत्पादक 11 राज्यों के 152 जिलों को कवर करते हैं।

एमएसपी के माध्यम से कपास किसानों को सशक्त बनाना



- 2025-26 के लिए, मध्यम रेशे वाली कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 7,710 रुपये प्रति क्विंटल और लंबे रेशे वाली कपास का 8,110 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया था। 2026-27 के लिए, इसे बढ़ाकर मध्यम रेशे वाली कपास का 8,267 रुपये प्रति क्विंटल और लंबे रेशे वाली कपास का 8,667 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया गया। इससे दोनों किस्मों के मूल्य में 557 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि हुई।
- कपास सीजन 2025-26 के दौरान, कॉटन कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (सीसीआई) ने एमएसपी संचालन के तहत कपास किसानों के साथ 24 लाख खरीद लेनदेन के माध्यम से 41,530 करोड़ रुपये मूल्य की 105.09 लाख गांठ कपास की खरीद की।



कपास उत्पादकता मिशन

कपास क्षेत्र में सतत वृद्धि न केवल लाभकारी कीमतों पर बल्कि उच्च उत्पादकता पर भी निर्भर करती है। इस समस्या के समाधान के लिए, देशव्यापी कपास उत्पादन को मजबूत करने हेतु 2025-26 में पांच वर्षीय कपास उत्पादकता मिशन शुरू किया गया था।

5,659.22 करोड़ रुपये के प्रावधान के साथ, यह मिशन अनुसंधान, नवाचार और जमीनी स्तर पर विस्तार सहायता पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य जलवायु-प्रतिरोधी, कीट-प्रतिरोधी और उच्च उपज वाली कपास की किस्मों का विकास करना है। अतिरिक्त लंबे रेशे (ईएलएस) कपास पर

विशेष जोर दिया गया है । इन प्रयासों को उन्नत प्रजनन और जैव प्रौद्योगिकी उपकरणों द्वारा समर्थन दिया जाएगा।

कृषि, फाइबर, कारखाना, फैशन और विदेशी - इन '5एफ' की परिकल्पना के अनुरूप , इस पहल का उद्देश्य किसानों की आय बढ़ाना और गुणवत्तापूर्ण कपास की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना है। यह मिशन कपास उत्पादक 14 राज्यों के 140 जिलों में लगभग 24 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करेगा और इससे लगभग 32 लाख किसानों को लाभ मिलने की उम्मीद है। मिशन ने आगामी वर्षों के लिए महत्वाकांक्षी उत्पादन लक्ष्य भी निर्धारित किए हैं। कपास उत्पादन को 2031 तक 297 लाख गांठों से बढ़ाकर 498 लाख गांठ करने का लक्ष्य रखा गया है । उच्च उत्पादकता से घरेलू स्तर पर कपास की उपलब्धता में सुधार होने की उम्मीद है। इससे आयात पर निर्भरता भी कम होगी और वस्त्र क्षेत्र मजबूत होगा।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत कपास पर विशेष परियोजना

कपास की उत्पादकता बढ़ाने में जमीनी स्तर पर किए जाने वाले प्रदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 2023-24 से **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम)** के अंतर्गत कपास पर एक विशेष परियोजना लागू की गई है । इसका उद्देश्य विभिन्न कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्रों के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकियों का बड़े पैमाने पर प्रदर्शन करना है। यह परियोजना देश के आठ प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों को कवर करती है। प्रायोगिक हस्तक्षेप तीन प्रमुख प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित हैं। इनमें उच्च घनत्व रोपण प्रणाली और कम अंतराल रोपण प्रणाली शामिल हैं। अतिरिक्त लंबे रेशे वाली कपास (ईएलएस) की उत्पादन तकनीक को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इसका उद्देश्य उत्पादकता, रेशे की गुणवत्ता और किसानों की आय में सुधार करना है।

High-Density Planting System

A method of planting cotton at higher plant population per hectare to improve yield and resource efficiency.



High-Density Planting System

Closer Spacing Planting System

A technique where cotton plants are grown at reduced row and plant spacing to increase productivity and optimise field utilisation.



Closer Spacing Planting System

Production Technology for Extra Long Staple Cotton

A set of production and crop management practices including improved varietal selection, balanced nutrition and pest-management protocols. These practices aim at enhancing fibre length and quality of Extra Long Staple cotton for premium textile use.

2023-24 में, 41.87 करोड़ रुपये के परिव्यय से 9,175 हेक्टेयर भूमि को कवर किया गया। 2024-25 के दौरान, 50.98 करोड़ रुपये के परिव्यय से लगभग 14,740 हेक्टेयर भूमि को सहायता प्रदान की गई। क्षेत्र प्रदर्शनों में उच्च घनत्व रोपण प्रणाली (एचडीपीएस) के तहत उपज में लगभग 40 प्रतिशत और कम अंतराल रोपण प्रणाली के तहत 32 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई। इन परिणामों से उत्साहित होकर, परियोजना को 2025-26 तक कुल 60.32 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ विस्तारित किया गया, जिसमें प्रतिबद्ध देनदारियां भी शामिल हैं। ये उत्साहजनक जमीनी स्तर के परिणाम कपास की उत्पादकता और किसानों की आय पर लक्षित प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों के ठोस प्रभाव को दर्शाते हैं।

कपास पर विशेष परियोजना की सफलता की कहानियाँ

राजकोट में सघन रोपण से कपास की पैदावार में सुधार हुआ है।



गुजरात के राजकोट में किसानों द्वारा अपनाई गई उच्च घनत्व रोपण प्रणाली

गुजरात के राजकोट जिले के कपास उत्पादक श्री विनोदभाई विरजीभाई वडोदरिया ने कपास पर विशेष परियोजना के तहत उच्च घनत्व रोपण प्रणाली अपनाई। उन्होंने पौधों के बीच **90 सेमी x 15 सेमी** की दूरी पर कपास बोई। इससे प्रति एकड़ पौधों की संख्या में वृद्धि हुई, जबकि पहले वे **135 सेमी x 45 सेमी** की दूरी पर पौधे बोते थे। इस पद्धति से कपास की उपज **15 क्विंटल प्रति एकड़** हो गई, जो पारंपरिक रोपण की तुलना में लगभग **30-35 प्रतिशत** अधिक है। समय से पहले कटाई से उन्हें गुलाबी बॉलवर्म से होने वाले नुकसान को कम करने में भी मदद मिली। इससे किसानों की आय में वृद्धि हुई और आसपास के किसानों को भी इस तकनीक को अपनाने के लिए प्रोत्साहन मिला।

जलगांव में पौधों के बीच कम दूरी रखने से कपास की उत्पादकता में बदलाव हुआ।



महाराष्ट्र के जलगांव जिले में कपास की रोपाई के बीच कम अंतराल की नीति अपनाई गई है।

महाराष्ट्र के जलगांव जिले के कपास किसान श्री भास्कर तापिराम चौधरी ने कपास पर विशेष परियोजना के तहत 90 सेमी x 30 सेमी की कम दूरी पर कपास की रोपाई की। उन्होंने बेहतर फसल प्रबंधन, अनुशंसित उर्वरक प्रयोग और एकीकृत कीट एवं पोषक तत्व प्रबंधन को अपनाया। इस उपाय से सूखे की स्थिति में भी फसल की वृद्धि मजबूत हुई। इस प्रदर्शन में प्रति एकड़ 11 क्विंटल उपज दर्ज की गई, जबकि किसान के सामान्य तरीके से 8 क्विंटल उपज प्राप्त होती थी। इससे उपज में 37.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई और कुल लाभप्रदता में सुधार हुआ।

कपास किसान ऐप

कपास की खरीद को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का भी उपयोग किया जा रहा है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) प्रणाली के तहत खरीद को सुव्यवस्थित करने और किसानों को प्रक्रिया के केंद्र में रखने के लिए कपास किसान मोबाइल एप्लिकेशन शुरू किया गया है। यह प्लेटफॉर्म कपास उत्पादकों को स्व-पंजीकरण पूरा करने और चार सप्ताह के आधार पर खरीद स्लॉट बुक करने में सक्षम बनाता है। इससे प्रतीक्षा समय में काफी कमी आई है और खरीद केंद्रों पर लंबी कतारें समाप्त हो गई हैं।

अब तक 41 लाख से अधिक किसानों के पंजीकरण के साथ, इस एप्लिकेशन ने एमएसपी संचालन में पारदर्शिता और दक्षता को मजबूत किया है। यह अग्रिम स्लॉट बुकिंग, आधार-लिंकड भुगतान और वास्तविक समय एसएमएस अपडेट की सुविधा प्रदान करता है। पंजीकरण और खरीद से लेकर अंतिम भुगतान तक, हर चरण में ये सुविधाएं उपलब्ध हैं। प्रक्रिया को डिजिटाइज़ करके, ऐप ने कपास खरीद को कागज रहित और किसान-हितैषी प्रणाली में बदल दिया है।

भारतीय कपास की ब्रांडिंग - कस्तूरी कॉटन भारत

कस्तूरी कॉटन भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है। इसका उद्देश्य ट्रेसबिलिटी, प्रमाणीकरण और ब्रांडिंग के माध्यम से भारतीय कपास के मूल्य और वैश्विक स्थिति को बढ़ाना है। यह कार्यक्रम वस्त्र मंत्रालय, कॉटन कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड और कॉटन टेक्सटाइल्स एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है। इसका कुल बजट 30 करोड़ रुपये है, जिसमें से 15 करोड़ रुपये व्यापार और उद्योग निकायों द्वारा और 15 करोड़ रुपये वस्त्र मंत्रालय द्वारा दिए गए हैं।



मुख्य विशेषताएं

- कस्तूरी कॉटन भारत की वेबसाइट (<https://www.kasturicotton.com/>) सूचना, अपडेट और जिनर पंजीकरण के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में लॉन्च की गई है। यह वेबसाइट कस्तूरी कॉटन भारत को अन्य कंपनियों से अलग करने वाली अनूठी प्रक्रियाओं को भी उजागर करती है।
- **41 जिनिंग मिलों और 75 आपूर्ति श्रृंखला सदस्यों सहित 116 इकाइयों ने अपना पंजीकरण नवीनीकृत कराया है।**
- 30 जून 2026 तक, **3,29,550 गांठों को प्रमाणित किया जा चुका है, जिसमें सीसीआई से 3,22,400 गांठें शामिल हैं।**
- यह प्रमाणन 28 मिमी या उससे अधिक रेशे वाली लंबी रेशे की कपास और 35 मिमी या उससे अधिक रेशे वाली अतिरिक्त लंबी रेशे की कपास (ईएलएस) को कवर करता है। राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) द्वारा मान्यता प्राप्त परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशालाओं की एजेंसियों के लिए इन किस्मों का परीक्षण करता है ।
- क्यूआर-आधारित प्रमाणीकरण और ब्लॉकचेन तकनीक संपूर्ण प्रक्रिया में पता लगाने की क्षमता सुनिश्चित करती है।

कस्तूरी गांवों, जागरूकता कार्यशालाओं, ब्रांडिंग, ट्रेसबिलिटी और सतत विकास प्रथाओं जैसी अन्य पहलों से कार्यक्रम को मजबूती मिलती है। इस प्रकार, भारतीय कपास को शुद्धता, गुणवत्ता और सतत विकास के वैश्विक प्रतीक के रूप में स्थापित किया जाता है।

करघे से परे कपास: कपास का बहुमुखी स्वरूप

कपास सिर्फ कपड़ों के लिए रेशे का स्रोत नहीं है। यह फसल कई मूल्यवान उप-उत्पाद भी उत्पन्न करती है जो भोजन, पशु आहार और ग्रामीण ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में योगदान देते हैं । कच्चे कपास के बीज में लगभग एक तिहाई रुई और दो तिहाई बीज होते हैं ।

बीज में लगभग 18 प्रतिशत खाद्य तेल होता है, जबकि शेष रुई का उपयोग मवेशियों, मुर्गी पालन और मछलियों के लिए पौष्टिक चारे के रूप में व्यापक रूप से किया जाता है।

कपास के बीज के तेल को अक्सर "हार्ट ऑयल" कहा जाता है। इसमें लगभग 50 प्रतिशत आवश्यक पॉलीअनसैचुरेटेड फैटी एसिड होते हैं, जबकि कई पारंपरिक तेलों में यह मात्रा लगभग 30 प्रतिशत होती है। यह संरचना हृदय स्वास्थ्य के लिए सहायक मानी जाती है। तेल निकालने के बाद, बचे हुए अवशेष को संसाधित करके पशुओं के चारे के लिए तेल रहित खली बनाई जाती है। अन्य उप-उत्पादों में लिंटर्स और हल्स शामिल हैं, जबकि सूखे कपास के डंठल ग्रामीण क्षेत्रों में बायोमास ईंधन के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

कपास के रेशों का चिकित्सा क्षेत्र में भी उपयोग होता है। कताई के लिए अनुपयुक्त छोटे रेशों को संसाधित करके शोषक या शल्य चिकित्सा कपास बनाया जाता है। उच्च अवशोषण क्षमता और शुद्धता के कारण इनका उपयोग स्वास्थ्य सेवा में किया जाता है।

इन विविध उपयोगों से पोषण, पशुधन, उद्योग और स्वास्थ्य सेवा में कपास की भूमिका स्पष्ट होती है। इसकी व्यापक उपयोगिता कृषि अर्थव्यवस्था और रोजमर्रा की जिंदगी में इस फसल के महत्व को रेखांकित करती है।

निरंतरता और परिवर्तन के सूत्र

भारत की कपास की कहानी निरंतरता और परिवर्तन की कहानी है। सदियों से चली आ रही खेती और व्यापार पर आधारित यह क्षेत्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी में प्रगति और लक्षित नीतिगत समर्थन के माध्यम से लगातार विकसित हो रहा है। उत्पादकता में सुधार, किसानों की आय को मजबूत करने, खरीद प्रक्रिया को आधुनिक बनाने और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के प्रयास एक अधिक लचीले कपास पारिस्थितिकी तंत्र को आकार दे रहे हैं। खेत से लेकर वैश्विक बाजार तक, कपास भारत के कृषि और औद्योगिक परिदृश्य में गहराई से समाया हुआ है। जैसे-जैसे नई पहलें गुणवत्ता, स्थिरता और मूल्यवर्धन को बढ़ावा दे रही हैं, यह क्षेत्र आने वाले वर्षों में आजीविका, उद्योग और आर्थिक विकास को समर्थन देने के लिए अच्छी स्थिति में है।

संदर्भ

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

https://seednet.gov.in/cms/home/readyreckoner/Seed_4/19_Cotton_Seeds_Price_Control_Order_2015.PDF

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2042234@=3&lang=2>

https://ecotton.dac.gov.in/HomeController/about_project

<https://ecotton.dac.gov.in/high-density-planting-system>

<https://ecotton.dac.gov.in/closer-spacing-planting-system>

<https://ecotton.dac.gov.in/extra-long-staple>

<https://cotton.dac.gov.in/circular.aspx>

<https://cotton.dac.gov.in/Mis/Docs/636990420200358183-d6fe6a24-6bfd-463f-b1e3-f3505913aa8822.1. Publication-Status Paper of Indian Cotton-compressed.pdf>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2258187®=3&lang=1>

वस्त्र मंत्रालय

<https://www.texmin.gov.in/static/uploads/2025/07/db767d1d1501e27672906cd8c320c5f4.pdf>

<https://cotcorp.org.in/faq>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2227424®=3&lang=2>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2099411®=3&lang=2>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2146756®=3&lang=2>

<https://www.pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2217001®=1&lang=1>

[https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2241807®=3&lang=2#:~:text=In%20a%20significant%20step%20towards,of%20India%20\(CCI\)%20for%20the](https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2241807®=3&lang=2#:~:text=In%20a%20significant%20step%20towards,of%20India%20(CCI)%20for%20the)

<https://www.texmin.gov.in/static/uploads/2026/05/5c48e80d2180ca3194b9e9b01340696d.pdf>

संस्कृति मंत्रालय

<https://www.indianculture.gov.in/digital-district-repository/district-repository/establishment-swadeshi-mill-or-model-mill-1890>

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

<https://www.investindia.gov.in/team-india-blogs/cotton-textile-industry-india>

<https://www.ibef.org/exports/cotton-industry-india>

[पीडीएफ देखने के लिए यहां क्लिक करें](#)

पीआईबी अनुसंधान

(Explainer ID: 159274)